<u>अंतर्ध्वनि अंक -२</u> <u>(पंडित संजीव जैन एवं चेतना शुक्ला)</u>

1- मंगलाचरण -

अर्हन्त सिद्ध सूरि उपाध्याय साधु सर्व, अर्थ के प्रकाशी मांगलिक उपकारी हैं|
जिनको स्वरुप जान राग तैं भई जो भक्ति, काय को नमाय स्तुति उच्चारी है ||

धन्य - धन्य तिनहि से काज सब आज भये, कर जोरि बार-बार वंदना हमारी है |
मंगल कल्याण सुख ऐसो हम चाहत हैं, होउ मेरी ऐसी दशा जैसी तुम धारी है ||

भजन २-भले रूठ जाये ये सारा जमाना, नहीं रागियों की शरण में हैं जाना, बस एक वीतरागी को सिर हैं झुकाना
ये श्रद्धान हैं मेरा मेरु समाना,नहीं रागियों की शरण में हैं जाना, बस एक वीतरागी को सिर हैं झुकाना

१-मेरे ज्ञान और ध्यान में बस तुम्ही हो, अटल मेरे श्रद्धान में बस तुम्ही हो,
नहीं लाज़ ,गौरव ना भय मुझको खाना ,नहीं रागियों की शरण में हैं जाना, बस एक वीतरागी को सिर हैं झुकाना

२- तुम्ही से मुझे मुक्ति मार्ग मिला है, रत्नत्रय का सुन्दर चमन ये खिला है -२
ना तीर्थंकरों के कुल को है लजाना,नहीं रागियों की शरण में हैं जाना, बस एक वीतरागी को सिर हैं झुकाना

३- में हूँ मात्र ज्ञायक ये अनुभव में जाना, तिहुँ लोक में बस उपादेय माना,
ये गुरुओं का ऋण है, मुझे जो चुकाना,नहीं रागियों की शरण में हैं जाना, बस एक वीतरागी को सिर हैं झुकाना

४- हैं आदर्श अकलंक गुरुवर हमारे, हैं निकलंक हम सबको प्राणो से प्यारे,
धरम के लिए जिनने मस्तक कटाया, नहीं जैन कुल को उन्होंने लजाया,
उसी मार्ग पर हमको चलके दिखाना,नहीं रागियों की शरण में हैं जाना, बस एक वीतरागी को सिर हैं झुकाना

अंतर्ध्वनि अंक -२ (पंडित संजीव जैन एवं चेतना शुक्ला)

भजन ३ -ज्ञान सम्यक मेरा हो गया -२ ,मिथ्या भ्रम का अँधेरा विलय हो गया|

१- दृष्टि एकांत की ,थी बनी थी मेरी,और अनेकांत से में बेखबर रहा

स्याद्वादी सहज हो गया -२ ज्ञान में ज्ञान का ज्ञान अब हो गया, ज्ञान सम्यक ....

२- माना अपना उसे जो ना अपना हुआ,जो था अपना उसी से पराया रहा-२

भेद विज्ञान अब हो गया, एक अभेद की धारा में वह बह गया, ज्ञान सम्यक ....

३- वीतरागी प्रभु,वीतरागी गुरु, मोक्ष की मनो तैयारी हो गयी शुरू-२

धन्य नरभव मेरा हो गया -२ राग जाने न जाने कहाँ खो गया,ज्ञान सम्यक ....

४- दृष्टि में आत्मा, भक्ति परमात्मा,ऐसी आराधना हो सिद्धातमा -२ हो सिद्धातमा

मार्ग ऐसा मुझे मिल गया, मानो भव के भ्रमण का हरण हो गया, ज्ञान सम्यक ....

भजन ४ - जब मुनिवर आते है वैराग्य जगाते हैं,पर द्रव्यों, पर भावो से हमको वो भिन्न बताते हैं -२

१- मुनिराज रहे वन में, नहीं राज करें तन में -२ बारह भावना रहे बस जिनके चिंतन में-२,

सिद्धों जैसा बनने का मार्ग बताते हैं -२ पर द्रव्यों पर भावो से हमको वो भिन्न बताते हैं -२-

२- नहीं विषियों की आशा, बोलें हितमित भाषा,परिग्रह से दूर रहे, नहीं रखते अभिलाषा-२ ,

समता और शांति का वो पाठ पढ़ाते हैं. पर द्रव्यों पर भावो से हमको वो भिन्न बताते हैं -२

३-अरि मित्र और महल मसान, निंदक या स्तुतिवान, कोई अर्घ उतारनवान, कोई असि से करे प्रहार,

प्रत्येक स्थिति में सम भाव बढ़ाते हैं, पर द्रव्यों पर भावो से हमको वो भिन्न बताते हैं -२

अंतर्ध्वनि अंक -२ (पंडित संजीव जैन एवं चेतना शुक्ला)

४-कर भव्यों पर करुणा, करते श्रुत की रचना, और अशुभ भाव से वो, बस चाहते हैं बचना,

शुद्धोपयोग का ही पुरषार्थ बढ़ाते हैं, पर द्रव्यों पर भावो से हमको वो भिन्न बताते हैं -२

जब मुनिवर आते है वैराग्य जगाते हैं,पर द्रव्यों पर भावो से हमको वो भिन्न बताते हैं -२

भजन ५ - स्वर्ग से सुन्दर अनुपम है ये जिनवर का दरबार -२, श्रद्धा से जो ध्यावे निश्चित हो जाता भाव पार,

यही श्रद्धान हमारा नमन हो तुम्हे हमारा

१- कभी ना छूटे श्रद्धा तुम पर भगवान हमारी -२ झुक जाएगी जीवन में प्रतिकूलता सारी,

है विश्वास हमारा एक दिन छूटेगा संसार, यही श्रद्धान हमारा, नमन हो तुम्हे हमारा

२ - निरवांछित है भगवन, ये आराधना हमारी, होवे दशा हमारी, बस जैसे हुई तुम्हारी -२

रत्नत्रय का मार्ग चलेंगे, पाए मुक्ति द्वार, यही श्रद्धान हमारा। ....

३- स्याद्वाद वाणी ही, भ्रम का अज्ञान मिटाये-२, निजगुण पर्यायें ही, अपना परिवार बताये|

ना भूलेंगे मुनिराजो का ये अनंत उपकार, यही श्रद्धान हमारा। ....

४- लोकालोक झलकते कैवल्य ज्ञान है पाया,फिर भी शुद्धातम ही बस उपादेय बतलाया|

मानो आन मिला मुझको ये, द्वादशांग का साथ,यही श्रद्धान हमारा। ....

भजन ६- अपना करना हो कल्याण, साँचे गुरुवर को, जिनकी वाणी में अमृत बरसता है

१- रहते शुद्धातम में लीन, जो है विषय कषाय विहीन -४

जिनके ज्ञान में ज्ञायक झलकता है -2

अंतर्ध्वनि अंक -२ (पंडित संजीव जैन एवं चेतना शुक्ला)

२- जिनकी वीतरागी छवि प्यारी, मिथ्या तिमिर मिटावन हारी -4

जिनके चरणों मैं चक्री भी झुकता है -2

३- पाकर ऐसे गुरु का संग, ध्याओ ज्ञायक रूप असंग -4

निज के आश्रय से ही शिव मिलता है -2

४- अनुभव करो ज्ञान में ज्ञान होवे ध्येय रूप का ध्यान -4

फेरा भव भव का ऐसे ही मिटता है -2

भजन ७ - मेरी मैली परिणति नाथ कब निर्मल होगी -2

कब बरसन मुखता त्याग स्व सन्मुख होगी

१- कल अनादि से भववासी -२ , भ्रमता आया लख चौरासी

यह भव दुःख दायी जाल मंगलमय होगी

२- आपा पर का भेद ना जाना-२ रत्नत्रय निधि ना पहिचाना

कब धर जैनागम सार समकित मय होगी

३- पंच समिति और पंच महाव्रत -२ षट आवश्यक सात शेष धर

तज अक्ष विषय विष पांच, मुनि वन शुद्ध होगी

४- अंतर बाहिर परिग्रह त्यागू -२ द्वादश विधि तप को आचारू

कब धर निज ध्रुव का ध्यान, ध्रुवमय ही होगी

अंतर्ध्वनि अंक -२ (पंडित संजीव जैन एवं चेतना शुक्ला)

५- तेरा ज्ञानामृत रस पीकर -२ काल अनादि का जहर घुलाकर

कब अनंत काल को नाथ आनन्दमय होगी

६- छोड़ जगत की आस -बास सब -2 , तेरी शरणा गही नाथ अब

कर नेम प्राप्त ध्वनि सार, तन्मय ही होगी

भजन ८ - घर में ही वैरागी भरतजी ,घर में ही वैरागी -२ , जड़ वैभव से भिन्न स्वयं में निज वैभव अनुरागी

१- छः खंडो को तुमने जीता, ये कहने में आया -२ लेकिन जग की विजय में उन ने खुद को हरा पाया

भोर भयी समकित की अंतर रेन मोह की भागी ।

२- धन्य धन्य वह लोग वही जो दिव्य ध्वनि सुन पाते -२ ,किन्तु भरतजी छः खण्डों पर विजय ध्वजा फहराते

भाग्यवान कहे सारी दुनिया पर समझे वो अभागी

३- चक्रवर्ती थे छह खंडों के, पर अखंड अंतर में-२ बाहर से भोगी दिखते पर योगी अभयंतर में

चक्रीपद भी नहीं सुहाए -२ शुद्धातम रूचि लागी

४- भावलिंगी संतो की प्रतिदिन,भरत प्रतीक्षा करते, नवधा भक्ति से पड़गाहन का भाव हृदय में धरते

हुए एक अंतर मुहूर्त में, सारे जग के त्यागी

भजन ९- ज्ञायक उसके लक्ष्य में आये, जो पढ़ले एक बार, समयसार, समयसार महा ग्रन्थ समयसार -२

कुंद कुंद मुनि के चरणों में वंदन बारम्बार समयसार, समयसार महा ग्रन्थ समयसार -२

अंतर्ध्वनि अंक -२ (पंडित संजीव जैन एवं चेतना शुक्ला)

१- काम भोग बंधन की कथा तो सबको सहज सुलभ है, पर से भिन्न एकत्व भाव की उपलब्धि दुर्लभ है,

दुर्लभ सहज सुलभ हो जाये -२ ऐसा चमत्कार, समयसार, समयसार महा ग्रन्थ समयसार -२

२- कौतुहली निजातम का मरकर भी तुम हो जाना, और पड़ोसीपन कर पर का आतम अनुभव लाना

परद्रव्यों से भिन्न त्रिकाली जब अनुभव में आएगा शरीर अदि पुद्गल द्रव्यों का सर्व विमोह पलायेगा

ऐसा निर्मल भेद ज्ञान ही आत्म ख्याति का सार समयसार, समयसार महा ग्रन्थ समयसार -२

३- जैसे लोह समान स्वर्ण की बेड़ी भी है बाँधती वैसे ही शुभ अशुभ कर्म की दोनों बेड़ी बाँधती

पुण्य भला है पाप बुरा है अज्ञानी ये मानता लेकिन इनमे कोई ना अंतर सम्यक ज्ञानी जानता

नव तत्वों में छिपा हुआ है -२ ऐसा जानन हार, समयसार, समयसार महा ग्रन्थ समयसार -२

४- धन का अर्थी जैसे जग में राजा की श्रद्धा करे चले उसी की आज्ञा में और रूचि पूर्वक श्रद्धा करे

यदि चाहिए मोक्ष तुम्हे तो जीवराज को जानिए, करो लीनता उसमें ही और श्रद्धा से पहचानिये

अशरीरी होने का मानो -२ स्वपन हुआ साकार,समयसार, समयसार महा ग्रन्थ समयसार -२

भजन १०- हे ज्ञान, हे ज्ञान,हे ज्ञान,हे ज्ञान, बंध से छुड़ाता मुक्ति दिलाता -२ हमसे तुम्हारा तादात्म नाता -२

सारे जग को तू ही जान , हे ज्ञान, हे ज्ञान,हे ज्ञान,हे ज्ञान

१-   तेरे ही सहारे जग से हो न्यारे-2 कर्ता पन का भार उतारे -2

हो जाये भेद ज्ञान- हे ज्ञान, हे ज्ञान,हे ज्ञान,हे ज्ञान ,

२-   सबका ज्ञाता निज में समाता-2 शुद्धातम को लक्ष्य बनाता-2

होवे सम्यक ज्ञान, हे ज्ञान, हे ज्ञान,हे ज्ञान,हे ज्ञान